IJAER/ January-February 2019/Volume-8/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

वर्तमान भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की उभरती हुई नवीन भूमिकाएं

डॉ ओमप्रकाश शर्मा

सह आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय

सवाई माधोपुर (राजस्थान)

सार

यह शोधपत्र भारत में विकास नीति के प्रक्षेप पथ में स्पष्ट ग्रामीण महिलाओं के कार्य की अवधारणा का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है। यह तर्क देता है कि महिलाओं के लिए विकास में स्व-प्रेरित या स्वैच्छिक भागीदारी की विशेषता संरचनात्मक समायोजन की अवधि तक सीमित नहीं है। इसके पूर्ववर्ती राष्ट्रीय विकास और इसके भीतर महिलाओं की भूमिका की पिछली अवधारणाओं में निहित हैं, जो अनिर्दिष्ट सामुदायिक अभिनेताओं की ओर से स्वैच्छिकता पर निर्भरता द्वारा निरंतर चिह्नित हैं। इस प्रकार, जबकि महिला विकास का भार सामुदायिक स्वैच्छिकता से छोटे समूह स्वैच्छिकता की ओर स्थानांतरित करना समकालीन अवधि की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, यह एक अन्य स्तर पर, राज्य नीति के प्रक्षेप पथ का विस्तार करता है जो ग्रामीण भारत में कामकाजी महिलाओं के लिए केंद्रीय जिम्मेदारी लेने में विफल रहा है। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में विकास पहलों के उपभोक्ता के रूप में नीति के पात्र के रूप में ग्रामीण महिला की अवधारणा में बदलाव के समानांतर ग्रामीण कामकाजी महिला की एक अधूरी धारणा बनी हुई है।

मूल शब्द: महिलाओं की भूमिका, ग्रामीण।

परिचय

वैदिक काल में महिलाओं को हर तरह से पुरुषों के बराबर माना जाता था , महिलाओं पर किसी तरह की पाबंदी नहीं थी। यह बात 'सर हर्बर्ट रिस्ले ' जैसे विद्वानों ने भी स्वीकार की थी कि भारत में वैदिक काल की महिलाओं को आज की यूरोपीय महिलाओं से कहीं ज़्यादा आज़ादी हासिल थी। उन्हें समाज में अच्छा स्थान तो मिला, लेकिन यह आज़ादी ज़्यादा दिनों तक नहीं रही और 18वीं और 19वीं सदी की महिलाओं को सती प्रथा, पर्दा प्रथा जैसी कई कुरीतियों का सामना करना पड़ा। यद्यपि समाज सुधारकों के महान प्रयासों से ये बुराइयाँ लुप्त हो गईं, परन्तु उन्हें वैदिक काल जैसी स्वतंत्रता नहीं मिली और वे दलित जीवन जीते रहे।

आज़ादी से पहले भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी। वे बहुविवाह, सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों से ग्रसित थीं। राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, राम कृष्ण परमहंस जैसे समाज सुधारकों के महान प्रयासों से उनकी स्थिति में सुधार आया। हंसा आदि। भारतीय संविधान के अस्तित्व में आने के बाद कानून के गठन ने बुराइयों को समाप्त कर दिया और महिलाओं को कई अधिकार देकर सशक्तीकरण की प्रक्रिया शुरू की। महिला सशक्तिकरण को महिलाओं की अपनी पसंद निर्धारित करने की क्षमता और खुद के लिए और दूसरों के लिए सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने के उनके अधिकार को बढ़ावा देने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। महिला

सशक्तिकरण और महिला अधिकारों को बढ़ावा देना एक प्रमुख वैश्विक आंदोलन के हिस्से के रूप में उभरा है और हाल के वर्षों में नई जमीन तोड़ना जारी है। समानता के लिए खड़े होकर, महिलाओं ने अन्य महिलाओं को बोलने में मदद की है और उन्हें सशक्त बनाया है। एक अमेरिकी नारीवादी, पत्रकार और सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता 'ग्लोरिया स्टीनम' के शब्दों में, "महिलाएं हमेशा कहती हैं 'हम वह सब कुछ कर सकते हैं जो पुरुष कर सकते हैं' लेकिन पुरुषों को यह कहना चाहिए, 'हम वह सब कुछ कर सकते हैं जो महिलाएं कर सकती हैं'"। महिला शिक्षा के लिए एक पाकिस्तानी कार्यकर्ता और सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता ' मलाला यूसुफजई ने कहा था, "मैं अपनी आवाज उठाती हूं - इसलिए नहीं कि मैं चिल्ला सकूं, बल्कि इसलिए कि जिनकी आवाज नहीं है, उनकी आवाज सुनी जा सके... जब हममें से आधे लोगों को रोका जाता है तो हम सफल नहीं हो सकते।" किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति और उनका दर्जा उस समाज की सभ्यता का सूचक होता है। विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को समान भागीदार माना जाना चाहिए। लेकिन, सदियों के शोषण और दमन के कारण भारतीय महिलाएं अब तक पिछड़ी हुई हैं। यहां महिलाओं का सशक्तीकरण जरूरी हो गया है, क्योंकि उनके साथ हर मोर्चे पर भेदभाव किया जा रहा है। 1985 में नैरोबी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला सम्मेलन2 में महिला सशक्तीकरण की अवधारणा पेश की गई थी। महिला सशक्तीकरण का मतलब है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, जातिगत और लिंग आधारित भेदभाव की विभिन्न जकड़नों से मुक्ति दिलाना। इसका मतलब है महिलाओं को जीवन के फैसले लेने की आजादी देना। महिला सशक्तीकरण में ही यह स्पष्ट किया गया है कि सामाजिक अधिकार, राजनीतिक अधिकार, आर्थिक स्थिरता, न्यायिक ताकत और अन्य सभी अधिकार भी महिलाओं को समान रूप से दिए जाने चाहिए।

उद्देश्य

1. ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना ।
2. वर्तमान भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की नई भूमिकाओं का अध्ययन करना ।

ग्रामीण महिला

अब यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि भारत में नियोजन के पहले चरण में महिलाओं के कार्य या आर्थिक विकास में उनके योगदान को अदृश्य कर दिया गया था और इस पर यहां विस्तार से चर्चा नहीं की जाएगी।1 यह चरण मोटे तौर पर भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति की रिपोर्ट जारी होने से पहले के नियोजन के वर्षों से मेल खाता है। मेरा तर्क है कि योजना दस्तावेजों के पाठ में उनकी सीमित उपस्थिति के बावजूद, इस चरण के दौरान ग्रामीण कामकाजी महिलाओं पर नीति दृष्टिकोण में स्वैच्छिकता के महत्वपूर्ण तनावों का पता लगाया जा सकता है। इस स्वैच्छिकता की दो विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं। पहली यह दावा है कि राष्ट्र निर्माण के चरण में, राज्य का ध्यान केवल हस्तक्षेप के चयनित क्षेत्रों में ही समर्पित किया जा सकता है। राज्य मशीनरी की प्रमुख जिम्मेदारियों को उठाने में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका ताकि उसे प्रशासनिक गतिविधि के लिए अधिक समय दिया जा सके, पहली योजना का एक प्रमुख विषय है।

पहली योजना में स्वैच्छिक संगठनों को सौंपी गई एक महत्वपूर्ण भूमिका 'महिलाओं, युवाओं और छात्रों के लिए रचनात्मक कार्य के क्षेत्रों को विकसित करने' का प्रयास करना है। ऐसे संगठनों के गठन को विस्तार से समझना महत्वपूर्ण है , जिन्हें पहली योजना में महिलाओं के लिए एकमात्र महत्वपूर्ण पहल करनी थी:

विभिन्न ठोस कार्यों के निष्पादन में, हर जगह छोटे-छोटे समूह सहकारी गतिविधि और पहल के लिए गुंजाइश पा सकते हैं, और हर व्यक्ति के पास कुछ ऐसा हो सकता है जिसके लिए वह अपना खाली समय और ऊर्जा समर्पित कर सके। व्यक्तियों और समूहों की ओर से अनुशासित सेवा के ये कार्य सभी स्तरों पर नेतृत्व के विकास को बढ़ावा देंगे और समुदाय को मजबूत करेंगे। (8.15, FYP 12)

उत्पादक और उद्यमी के रूप में महिलाएँ

कई ग्रामीण समुदायों में, महिलाएँ कृषि उत्पादों की मुख्य उत्पादक और उत्पादक हैं। उनकी भूमिका पारंपरिक कृषि गतिविधियों से आगे बढ़कर कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण और विपणन तक फैली हुई है। फसल उगाने से लेकर हस्तशिल्प उत्पादों को तैयार करने तक, महिलाएँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। पर्यावरण के अनुकूल और जैव प्रौद्योगिकी उत्पादों की बिक्री में ग्रामीण महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। इसके अलावा, महिला उद्यमी अपने कौशल और स्थानीय संसाधनों का लाभ उठाते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यम और छोटे पैमाने के व्यवसाय स्थापित कर रही हैं। चाहे वह सिलाई इकाई, खाद्य प्रसंस्करण उद्यम या हस्तशिल्प सहकारी स्थापित करना हो, महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यम ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा दे रहे हैं और रोजगार के अवसर पैदा कर रहे हैं

बाजार पहुंच और वितरण

ग्रामीण उत्पादकों के लिए अपने माल को बेचने और आय उत्पन्न करने के लिए बाजारों तक पहुँच महत्वपूर्ण है। ग्रामीण उत्पादों को शहरी और उपनगरीय बाजारों से जोड़ने में महिलाएँ अक्सर महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में काम करती हैं। किसान सहकारी समितियों, स्वयं सहायता समूहों और सामूहिक विपणन पहलों के माध्यम से, महिलाएँ स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं के वितरण की सुविधा प्रदान करती हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों के लिए बाजार तक पहुँच बढ़ती है। इसके अलावा, ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म और डिजिटल मार्केटिंग के उदय ने महिला उद्यमियों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और व्यापक ग्राहक आधार तक पहुँचने के नए रास्ते प्रदान किए हैं। प्रौद्योगिकी को अपनाकर, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भौगोलिक बाधाओं को पार कर रही हैं और पारंपरिक सीमाओं से परे अपनी बाज़ार पहुँच का विस्तार कर रही हैं

अनुसंधान क्रियाविधि

ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भूमिका और प्रभावों को समझने के लिए एक मजबूत कार्यप्रणाली की आवश्यकता है जो उनकी भागीदारी, सशक्तिकरण और आर्थिक योगदान की जटिलताओं को समझ सके। यह खंड ग्रामीण विपणन में महिलाओं के अध्ययन में नियोजित कार्यप्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें शोध डिजाइन, डेटा संग्रह तकनीक और विश्लेषणात्मक रूपरेखा पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

अनुसंधान डिजाइन

शोध डिजाइन अध्ययन के समग्र दृष्टिकोण और संरचना को शामिल करता है। ग्रामीण विपणन में महिलाओं के विषय का व्यापक रूप से पता लगाने के लिए, गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धतियों को मिलाकर मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण की सिफारिश की जाती है

गुणात्मक अनुसंधान

ग्रामीण विपणन में लगी महिलाओं के अनुभवों, चुनौतियों और आकांक्षाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चा और केस स्टडी जैसे गुणात्मक तरीकों का उपयोग किया जाता है। महिला उद्यमियों, कृषि उत्पादकों, बाजार मध्यस्थों और नीति निर्माताओं सहित प्रमुख हितधारकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार, उनकी भूमिकाओं, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और सामाजिक-आर्थिक संदर्भों पर समृद्ध, प्रासंगिक डेटा प्रदान करते हैं।

मात्रात्मक अनुसंधान

ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भागीदारी की सीमा को मापने, उनके आर्थिक योगदान का आकलन करने और उनके सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करने के लिए सर्वेक्षण और सांख्यिकीय विश्लेषण सहित मात्रात्मक तरीकों का उपयोग किया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं के प्रतिनिधि नमूने पर किए गए सर्वेक्षण आय स्तर, संसाधनों तक पहुँच, बाजार में भागीदारी दर और सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताओं जैसे चर पर मानकीकृत डेटा एकत्र करने में सक्षम बनाते हैं।

डेटा संग्रह तकनीक

ग्रामीण विपणन में महिलाओं के बारे में विश्वसनीय और व्यापक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रभावी डेटा संग्रह तकनीकें आवश्यक हैं। निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया जाता है:

प्राथमिक डेटा संग्रहण

प्राथमिक डेटा साक्षात्कार, सर्वेक्षण और फ़ोकस समूह चर्चाओं का उपयोग करके शोध प्रतिभागियों के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से एकत्र किया जाता है। आमने-सामने के साक्षात्कार महिलाओं के अनुभवों, दृष्टिकोणों और चुनौतियों की गहन खोज करने की अनुमति देते हैं, जबकि सर्वेक्षण बड़े पैमाने पर मात्रात्मक डेटा प्रदान करते हैं। फ़ोकस समूह चर्चाएँ सामूहिक चिंतन की सुविधा प्रदान करती हैं और शोध विषय पर विविध दृष्टिकोण उत्पन्न करती हैं

द्वितीयक डेटा विश्लेषण

सरकारी रिपोर्ट, अकादमिक अध्ययन और एनजीओ प्रकाशनों सहित द्वितीयक डेटा स्रोतों का विश्लेषण प्राथमिक डेटा को पूरक बनाने और शोध विषय की व्यापक प्रासंगिक समझ प्रदान करने के लिए किया जाता है। मौजूदा डेटासेट और साहित्य समीक्षा ग्रामीण विपणन में महिलाओं से संबंधित रुझानों, पैटर्न और नीतिगत निहितार्थों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं।

विश्लेषणात्मक फ्रेमवर्क

विश्लेषणात्मक ढांचे डेटा की व्याख्या और विश्लेषण का मार्गदर्शन करते हैं, पैटर्न, संबंधों और व्यापक विषयों की पहचान करने में मदद करते हैं। निम्नलिखित ढांचे नियोजित हैं:

लिंग विश्लेषण

लिंग-संवेदनशील दृष्टिकोण को अपनाया जाता है ताकि यह जांचा जा सके कि लिंग मानदंड, भूमिकाएं और शक्ति गतिशीलता ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भागीदारी को कैसे आकार देती हैं। लिंग विश्लेषण बाजार से संबंधित

गतिविधियों में लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए असमानताओं, असमानताओं और अवसरों पर प्रकाश डालता है

सशक्तिकरण मूल्यांकन

ग्रामीण विपणन में महिला सशक्तिकरण की बहुआयामी प्रकृति का आकलन करने के लिए कृषि सूचकांक (WEAI) और सतत आजीविका दृष्टिकोण जैसे सशक्तिकरण ढांचे का उपयोग किया जाता है। ये ढांचे महिलाओं की एजेंसी, संसाधनों तक पहुंच और निर्णय लेने और सामाजिक पूंजी पर नियंत्रण को मापते हैं, जिससे उनके सशक्तिकरण मार्गों की व्यापक समझ मिलती है।

आर्थिक प्रभाव आकलन

ग्रामीण विपणन में महिलाओं के आर्थिक योगदान का मूल्यांकन करने के लिए लागत-लाभ विश्लेषण, आय सृजन आकलन और मूल्य श्रृंखला विश्लेषण सहित आर्थिक विश्लेषण तकनीकों का उपयोग किया जाता है। ये विधियाँ महिलाओं की भागीदारी द्वारा सुगम वित्तीय लाभ, रोजगार सृजन और बाजार संबंधों को मापती हैं, उनके आर्थिक परिणामों को बढ़ाने के उद्देश्य से नीति और कार्यक्रम संबंधी हस्तक्षेपों को सूचित करती हैं। ग्रामीण विपणन में महिलाओं का अध्ययन करने की पद्धति में एक बहुआयामी दृष्टिकोण शामिल है जो गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान विधियों, विविध डेटा संग्रह तकनीकों और लिंग, सशक्तिकरण और आर्थिक चालकों की जटिलताओं के अनुरूप विश्लेषणात्मक रूपरेखाओं को जोड़ती है। एक समावेशी और कठोर पद्धति को अपनाकर, शोधकर्ता ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भूमिकाओं, चुनौतियों और प्रभावों के बारे में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि को उजागर कर सकते हैं, जो लैंगिक समानता, सशक्तिकरण और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साक्ष्य-आधारित नीतियों और हस्तक्षेपों को सूचित करते हैं।

परिणाम और चर्चा

ग्रामीण विपणन में महिलाओं पर किए गए अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण समुदायों में आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने, सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और लैंगिक मानदंडों को चुनौती देने में महिलाओं की बहुमुखी भूमिकाओं का पता लगाना था। गुणात्मक साक्षात्कार, सर्वेक्षण और द्वितीयक डेटा विश्लेषण को मिलाकर मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण के माध्यम से, अध्ययन ने ग्रामीण विपणन संदर्भों में महिलाओं की भागीदारी, सशक्तिकरण मार्गों और आर्थिक योगदान के बारे में व्यावहारिक निष्कर्ष निकाले।

ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भागीदारी

अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण विपणन परिदृश्य में महिलाएँ विविध भूमिकाएँ निभाती हैं, जो कृषि उत्पादन से लेकर बाज़ार मध्यस्थता और उद्यमशीलता के उपक्रमों तक फैली हुई हैं। कृषि समुदायों में, महिलाएँ अक्सर फसलों की प्राथमिक कृषक और उत्पादक होती हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। महिला किसानों के साथ साक्षात्कार से पता चला कि वे फसल की खेती, पशुपालन और कृषि-प्रसंस्करण गतिविधियों में शामिल हैं, जिससे उनके विविध कौशल और खाद्य उत्पादन में योगदान का पता चलता है। इसके अलावा, महिलाएँ ग्रामीण उत्पादों को बाज़ारों से जोड़ने, अपने सामाजिक नेटवर्क और सामुदायिक संबंधों का लाभ उठाने में महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में काम करती हैं ताकि कृषि वस्तुओं के वितरण और बिक्री को सुविधाजनक बनाया जा सके। किसान सहकारी समितियों, स्वयं

सहायता समूहों और सामूहिक विपणन पहलों के माध्यम से, महिलाएँ ग्रामीण उत्पादकों के लिए बाज़ार तक पहुँच बढ़ाती हैं, जिससे जमीनी स्तर पर आय सृजन और आर्थिक विकास में योगदान मिलता है।

सशक्तिकरण के रास्ते

अध्ययन में सशक्तिकरण एक केंद्रीय विषय के रूप में उभरा, जिसमें ग्रामीण विपणन में महिलाओं ने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों सहित कई आयामों में सशक्तिकरण का अनुभव किया। गुणात्मक साक्षात्कार और सर्वेक्षण डेटा विश्लेषण के माध्यम से सशक्तिकरण के कई प्रमुख मार्गों की पहचान की गई। ग्रामीण विपणन में महिलाओं की भागीदारी कई आयामों में सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक का काम करती है:

आर्थिक सशक्तिकरण

आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान करती है। सर्वेक्षण के परिणामों ने संकेत दिया कि जिन महिलाओं ने बाजार से संबंधित गतिविधियों में भाग लिया, उन्होंने गैर-प्रतिभागियों की तुलना में उच्च घरेलू आय और अधिक आर्थिक स्वायत्तता की सूचना दी। बाजारों, ऋण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुँच महिलाओं को अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने और अपने व्यवसायों में निवेश करने में सक्षम बनाने वाले महत्वपूर्ण कारकों के रूप में उभरी। आर्थिक रूप से, बाजार से संबंधित गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता, आय सृजन और संपत्ति संचय के अवसर प्रदान करती है। बाजारों, ऋण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुँच महिलाओं को अपने व्यवसायों में निवेश करने, अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने और घरेलू कल्याण में योगदान करने में सक्षम बनाती है।

सामाजिक सशक्तिकरण

बाजार सहकारी समितियों और उद्यमशील उपक्रमों में महिलाओं की भागीदारी उनके घरों और समुदायों के भीतर उनकी सामाजिक पूंजी और निर्णय लेने की स्वायत्तता को बढ़ाती है। महिला उद्यमियों के साथ साक्षात्कार ने स्थानीय शासन संरचनाओं के भीतर उनके बढ़े हुए आत्मविश्वास, नेतृत्व कौशल और दृश्यता पर प्रकाश डाला। पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और मानदंडों को चुनौती देकर, ग्रामीण विपणन में महिलाएँ सामाजिक गतिशीलता को नया रूप दे रही हैं और अधिक लैंगिक समानता को बढ़ावा दे रही हैं। सामाजिक रूप से, बाजार सहकारी समितियों और उद्यमशील उपक्रमों में महिलाओं की भागीदारी उनके घरों और समुदायों के भीतर उनकी सामाजिक पूंजी, निर्णय लेने की स्वायत्तता और नेतृत्व कौशल को बढ़ाती है। पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और मानदंडों को चुनौती देकर, ग्रामीण विपणन में महिलाएँ सामाजिक गतिशीलता को नया रूप दे रही हैं, अधिक लैंगिक समानता को बढ़ावा दे रही हैं और भावी पीढ़ियों को सशक्त बना रही हैं।

राजनीतिक सशक्तिकरण

बाजार सहकारी समितियों और सामूहिक कार्रवाई पहलों में भागीदारी महिलाओं को स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर अपने अधिकारों और हितों की वकालत करने का अधिकार देती है। सर्वेक्षण निष्कर्षों से पता चला है कि बाजार आधारित संगठनों में शामिल महिलाओं के नागरिक गतिविधियों में शामिल होने, अपनी राय व्यक्त करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने की अधिक संभावना थी। अपनी आवाज़ को बुलंद करके और सामूहिक कार्रवाई के लिए जुटकर, ग्रामीण विपणन में महिलाएँ अधिक समावेशी और भागीदारी वाली शासन प्रणाली में योगदान दे रही हैं। राजनीतिक रूप से, बाजार आधारित संगठनों में भागीदारी महिलाओं को स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर अपने अधिकारों और हितों

की वकालत करने का अधिकार देती है। अपनी आवाज़ को बुलंद करके और सामूहिक कार्रवाई के लिए जुटकर, ग्रामीण विपणन में महिलाएँ अधिक समावेशी और भागीदारी वाली शासन प्रणाली में योगदान दे रही हैं, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ और सामुदायिक लचीलापन बढ़ रहा है।

ग्रामीण विपणन में महिलाओं का आर्थिक योगदान

अध्ययन में आय सृजन आकलन, मूल्य श्रृंखला विश्लेषण और लागत-लाभ विश्लेषण के माध्यम से ग्रामीण विपणन में महिलाओं के आर्थिक योगदान को मापा गया। मुख्य निष्कर्षों में शामिल हैं:

आय पीढ़ी

ग्रामीण विपणन में लगी महिलाओं ने बताया कि गैर-प्रतिभागियों की तुलना में उनकी घरेलू आय अधिक है, जो उनके उद्यमशील उपक्रमों, कृषि उत्पादकता और बाजार संबंधों के कारण है। सर्वेक्षणों से पता चला है कि महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यम, जैसे कि सिलाई इकाइयाँ, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ और हस्तशिल्प सहकारी समितियाँ, ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त आय धाराएँ और रोजगार के अवसर पैदा करती हैं।

मूल्य संवर्धन

महिलाएं प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग के माध्यम से कृषि उत्पादों में मूल्य संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे उनकी विपणन क्षमता और लाभप्रदता बढ़ती है। मूल्य श्रृंखला विश्लेषण से पता चला है कि खाद्य संरक्षण और कपड़ा निर्माण जैसे कृषि प्रसंस्करण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के विविधीकरण और घरेलू और निर्यात बाजारों के लिए मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्माण में योगदान दिया है।

अध्ययन ने आय सृजन आकलन, मूल्य श्रृंखला विश्लेषण और लागत-लाभ विश्लेषण के माध्यम से ग्रामीण विपणन में महिलाओं के महत्वपूर्ण आर्थिक योगदान को परिमाणित किया। कृषि प्रसंस्करण इकाइयों, हस्तशिल्प सहकारी समितियों और विपणन समूहों जैसे महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यम, घरेलू और निर्यात बाजारों के लिए पर्याप्त आय धाराएं, रोजगार के अवसर और मूल्यवर्धित उत्पाद उत्पन्न करते हैं। इसके अलावा, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग के माध्यम से कृषि उत्पादों में मूल्य जोड़ने में महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण उत्पादकों और शहरी उपभोक्ताओं के बीच विपणन क्षमता, लाभप्रदता और बाजार संबंधों को बढ़ाती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाने और मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के माध्यम से, ग्रामीण विपणन में महिलाएं गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण समुदायों के लिए स्थायी आजीविका में योगदान देती हैं।

बाजार संबंध

बाजार सहकारी समितियों और सामूहिक विपणन पहलों में महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण उत्पादकों और शहरी उपभोक्ताओं के बीच बाजार संबंधों को मजबूत करती है। सर्वेक्षणों से पता चला है कि महिलाओं के नेतृत्व वाले विपणन समूहों ने शहरी और अर्ध-शहरी बाजारों में स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं की बिक्री को सुविधाजनक बनाया, जिससे ग्रामीण समुदायों के लिए बाजार के अवसरों का विस्तार हुआ और उनकी आय के स्रोत बढ़े

निष्कर्ष

ग्रामीण विपणन में महिलाओं पर किए गए अध्ययन ने ग्रामीण समुदायों में महिलाओं के सशक्तिकरण के मार्गों, आर्थिक योगदान और उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की है। कृषि उत्पादन से लेकर बाजार मध्यस्थता और उद्यमिता तक मूल्य श्रृंखला में उनकी भूमिकाओं के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन ने ग्रामीण संदर्भों में आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला है। निष्कर्ष में, ग्रामीण विपणन में महिलाओं पर किए गए अध्ययन ने ग्रामीण समुदायों में आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के चालकों के रूप में महिलाओं की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला है। महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को पहचानकर और उनका समाधान करके और उनकी ताकत और क्षमताओं का लाभ उठाकर, नीति निर्माता, व्यवसायी और हितधारक ग्रामीण विपणन में महिलाओं की पूरी क्षमता का दोहन कर सकते हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों के लिए लैंगिक समानता, समावेशी विकास और स्थायी आजीविका को बढ़ावा मिलेगा।

संदर्भ

1. अहमद ए. उत्पाद और सेवाएँ बेचने के लिए ग्रामीण विपणन रणनीतियाँ: मुद्दे और चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज रिसर्च; सी20 23 जनवरी ;2 (1)।

2. एशियन जे. मैनेजमेंट. 2015 अक्टूबर-दिसंबर ;6 (4):336-341.

3. अवधेश केएस, सत्यप्रकाश पी. ग्रामीण विपणन: भारत परिप्रेक्ष्य। पहला संस्करण . न्यू एज इंटरनेशनल प्रा. लिमिटेड; c2015.

4. कुमार ए. ग्रामीण विपणन रणनीतियाँ, मुद्दे और चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनालिटिकल एंड एक्सपेरीमेंटल मोडल एनालिसिस। 2019 दिसंबर ;11 (12):2769- 2781।

5. हखरू बी.पी. भारत में ग्रामीण विपणन की समीक्षा और ग्रामीण विपणन में नवाचार। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च; c2020 अक्टूबर, 10(5)।

6. भंडारी डी, खन्ना जी. ग्रामीण विपणन पर शोध लेख - जोधपुर जिले में एक अध्ययन। बहुविषयक क्षेत्र में अभिनव अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल; c2016 जुलाई, 2(7)।

7. अधिकारी डी, गाजी केएच, गिरी बीसी, अज़ीज़ादेह एफ, मोंडल एसपी। एएचपी-टॉपसिस प्रेरित बहु-मानदंड निर्णय लेने की विधि के आधार पर भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण विभिन्न दृष्टिकोणों से। नियंत्रण और अनुकूलन में परिणाम। 2023 ;12:100271 । उपलब्ध: https://doi.org/10.1016/j.rico.2023.100271 ।

8. बिस्वास बी, बानू एन. भारत में ग्रामीण और शहरी महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण: एक तुलनात्मक विश्लेषण। स्थानिक सूचना अनुसंधान। 2023 ;31 (1):73-89। उपलब्ध: https://doi.org/10.1007/s41324-022- 00472-3 .

9. शाहजहां के, सहती डब्ल्यूजेड, राडोविक एमएम. कृषि प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: मैमनसिंह -बांग्लादेश का केस स्टडी. अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा. 2022; (3-4):57-66.

10. पंटा एस, थापा बी. नेपाल के बर्दिया नेशनल पार्क के गेटवे समुदायों में उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण। जर्नल ऑफ इकोटूरिज्म। 2018 ;17 (1):20-42। उपलब्ध: https://doi.org/10.1080/14724049.2017.1299743 .

11. जयसावल एन, साहा एस. भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण चुनिंदा सरकारी पहलों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एंड रिव्यूज़। 2024 ;13:95 -114. उपलब्ध: https://doi.org/10.37794/IJSRR.2023.13110 .

12. फरजाना के, एट अल. महिला सशक्तिकरण में महिला उद्यमिता की भूमिका: बांग्लादेश के बरिशाल शहर में एक केस स्टडी । 2020 ;5:13 -24.

13. संब्रानी एस. ग्रामीण बाजारों को समझना – संभावित अवसरों और चुनौतियों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्यूटेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट। 2017 ;2 (1):113-117.

14. नायडू ए. भारत में ग्रामीण ग्राहकों के लिए विपणन की रणनीतियाँ: ग्रामीण विपणन का 4 ए मॉडल। जर्नल ऑफ रूरल एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट। 2017 ;5 (1):35.

15. शर्मा एन. भारत में ग्रामीण विपणन के उभरते क्षितिज। जेएसी: कंपोजिशन थ्योरी का एक जर्नल। 2020 जून ; XIII (VI):29-39।

16. मुखर्जी के, कोनार ए, घोष पी. भारत में जैविक खेती: एक संक्षिप्त समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एग्रोनॉमी। 2022 ;5 (2):113-118।

17. कोनार ए, मुखर्जी के, घोष पी, एट अल. पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों में आदिवासी समुदायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक औषधीय पौधे। जर्नल ऑफ फार्माकोग्नॉसी एंड फाइटोकेमिस्ट्री । 2022 ;11 (5):104-110.

18. बेरा पी, रे एस, तलपात्रा एसएन, घोष पी. तटीय क्षेत्र, पश्चिम बंगाल की मछुआरों की पोषक तत्व सेवन और जनसांख्यिकीय सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच संबंध का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर)। 2024 ;13 (4):868-871।